Shri Parvati Mangal Paath

श्रीपार्वती मंगल पाठ

(मंगल विवाह कारक प्रसंग)

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

'पार्वती-मंगल' प्रसंग में भगवान् शंकर के द्वारा आदिशक्ति पार्वती के कल्याणमय पाणिग्रहण का रसमय वर्णन है। इस मांगलिक काव्य के रचियता गोस्वामीतुलसीदास जी हैं। लक्ष्मी नारायण, सीता-राम की भांति ही शिव-पार्वती भी आदर्श दम्पत्ति एवं मंगलकारी देवता हैं। जिनकी सम्मिलित चरण वन्दना करने से पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव दूर होकर, प्रेम एवं शान्ति की स्थापना होती है। भक्तिभाव से नित्य इस दिव्य रचना का पाठ करने से स्त्री एवं पुरुष को अभिलाषित वर एवं कन्या की प्राप्ति होती है। विवाहोत्सवादि के समय इसका प्रेमसहित पाठ करने से सर्व प्रकार से मंगल होता है तथा शिव-शक्ति की सम्मिलित कृपा प्राप्त होती है। विवाह इच्छुक स्त्री एवं पुरुष भगवान् शिव एवं पार्वती की सम्मिलित पूजनार्चना करने के पश्चात् त्रिकाल संध्या इस परम पावन 'पार्वती-मंगल' चरित्र का पाठ करें एवं शिवलिंग का नित्य प्रचलित सामग्रियों से स्नान करायें। प्रारम्भ में अपने गुरु और गोस्वामीतुलसीदास जी के चरणों की वन्दना अवश्य करें।

।।पार्वती-मंगल।।

बिनइ गुरहि गुनिगनहि गिरिहि गननाथहि।

हृदयँ आनि सिय राम धरे धनु भाथहि।।

गावउँ गौरि गिरिस बिबाह सुहावन्।

पाप नसावन पावन मुनि मन भावन।।

कबित रीति नहिं जानउँ कबि न कहावउँ।

संकर चरित सुसरित मनहि अन्हवावउँ।।

पर अपबाद-बिबाद-बिदूषित बानिहि।

पावन करौं सो गाइ भवेस भवानिहि।।

जय संबत फागुन सुदि पाँचैं गुरु छिनु।

अस्विनि बिरचेउँ मंगल सुनि सुख छिनु छिनु।।

गुन निधानु हिमावानु धरनिधर धुर धनि।

मैना तासु घरनि घर त्रिभुवन तियमनि।।

कहहु सुकृत केहि भांति सराहिय तिन्ह कर।

लीन्ह जाइ जग जननि जनमु जिन्ह के घर।।

मंगल खानि भवानि प्रगट जब ते भइ।

तब ते रिधि-सिधि संपति गिरि गृह नित नइ।।

नित नव सकल कल्यान मंगल मोदमय मुनि मानहीं।

ब्रह्मादि सुर नर नाग अति अनुराग भाग बखानहीं।।

पितु मातु प्रिय परिवारु हरषहिं निरखि पालहिं लालहीं।

सित पाख बाढ़ति चंद्रिका जनु चंदभूषन भालहीं ।।1 ।।

कुंआरि सयानि बिलोकि मातु-पितु सोचहिं।

गिरिजा जोगु जुरिहि बरु अनुदिन लोचहिं।।

एक समय हिमवान भवन नारद गये।

गिरिबरु मैना मुदित मुनिहि पूजत भये।।

उमहि बोलि रिषि पगन मातु मेलत भई।

मुनि मन कीन्ह प्रणाम बचन आसिष दई।।

कुँआरि लागि पितु काँध ठाढ़ि भइ सोहई।

रूप न जाइ बखानि जानु जोइ जोहई।।

अति सनेहँ सतिभायँ पाय परि पुनि पुनि।

कह मैना मृदु बचन सुनिअ बिनती मुनि।।

तुम त्रिभुवन तिहुँ काल बिचार बिसारद।

पारबती अनुरूप कहिय बरु नारद।।

मुनि कह चौदह भुवन फिरउँ जग जहँ जहँ।

गिरिबर सुनिय सरहना राउरि तहँ तहँ।।

भूरि भाग तुम सरिस कतहुँ कोउ नाहिन।

कछु न अगम सब सुगम भयो बिधि दाहिन।।

दाहिन भए बिधि सुगम सब सुनि तजहु चित चिंता नई।

बरु प्रथम बिरवा बिरचि बिरच्यो मंगला मंगलमई।।

बिधिलोक चरचा चलति राउरि चतुर चतुरानन कही।

हिमवानु कन्या जोगु बरु बाउर बिबुध बंदित सही ।।2।।

मोरेहुँ मन अस आव मिलिही बरु बाउर।

लखि नारद नारदी उमहि सुख भा उर।।

सुनि सहमे परि पाइ कहत भए दंपति।

गिरिजहि लगे हमार जिवनु सुख संपति।।

नाथ कहिय सोइ जतन मिटइ जेहिं दूषनु।

दोष दलन मुनि कहेउ बाल बिधु भूषनु।।

अवसि होइ सिधि साहस फलइ सुसाधन।

कोटि कलप तरु सरिस संभु अवराधन।।

तुम्हरें आश्रम अबहिं ईसु तप साधहिं।

कहिअ उमहि मनु लाइ जाइ अवराधहिं।।

कहि उपाय दंपतिहि मुदित मुनिबर गए।

अति सनेहँ पितु मातु उमहि सिखवत भए।।

सजि समाज गिरिराज दीन्ह सबु गिरिजहि।

बदति जननि जगदीस जुबति जनि सिरजहि।।

जननि जनक उपदेस महेसहि सेवहि।

अति आदर अनुराग भगति मनु भेवहि।

भेवहि भगति मन बचन करम अनन्य गति हर चरन की।

गौरव सनेह सकोच सेवा जाइ केहि बिधि बरन की।।

गुन रूप जोबन सींव सुंदरि निरखि छोभ न हर हिएँ।

ते धीर अछत बिकार हेतु जे रहत मनसिज बस किएँ ।।3।।

देव देखि भल समय मनोज बुलायउ।

कहेउ करिअ सुर काजु साजु सजि आयउ।।

बामदेउ सन कामु बाम होइ बरतेउ।

जग जय मद निदरेसि फरु पायसि फर तेउ।।

रति पति हीन मलीन बिलोकि बिसूरति।

नीलकंठ मृदु सील कृपामय मूरति।।

आसुतोष परितोष कीन्ह बर दीन्हेउ।

सिव उदास तजि बास अनत गम कीन्हेउ।।

दोहा- अब ते रति नव नाथ कर होइहि नाम अनंगु।

बिनु बपु ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु।।

जब जदुबंस कृष्न अवतारा। होइहि हरन महा महि भारा।।

कृष्न तनय होइहि पति तोरा। बचनु अन्यथा होइ न मोरा।।

उमा नेह बस बिकल देह सुधि बुधि गई।

कलप बेलि बन बढ़त बिषम हिम जनु दई।।

समाचार सब सखिन्ह जाइ घर घर कहे।

सुनत मातु पितु परिजन दारुन दुख दहे।।

जाइ देखि अति प्रेम उमहि उर लावहिं।

बिलपहिं बाम बिधातहि दोष लगावहिं।।

जौ न होहि मंगल मग सुर बिधि बाधक।

तौ अभिमत फल पावहिं करि श्रमु साधक।।

साधक कलेस सुनाइ सब गौरहि निहोरत धाम को।

को सुनइ काहि सोहाय घर चित चहत चंद्र ललामको।।

समुझाइ सबहि दृढ़ाइ मनु पितु मातु, आयसु पाइ कै।

लागी करन पुनि अगमु तपु तुलसी कहै किमि गाइकै ।।4।।

फिरेउ मातु पितु परिजन लखि गिरिजा पन।

जेहिं अनुरागु लागु चितु सोइ हितु आपन।।

तजेउ भोग जिमि रोग लोग अहि गन जनु।

मुनि मनसहु ते अगम तपहिं लायो मनु।।

सकुचहिं बसन बिभूषन परसत जो बपु।

तेहिं सरीर हर हेतु अरंभेउ बड़ तपु।।

पुजइ सिवहि समय तिहुँ करइ निमज्जन।

देखि प्रेमु ब्रतु नेमु सराहहिं सज्जन।।

नीद न भूख पियास सरिस निसि बासरु।

नयन नीरु मुख नाम पुलक तनु हियँ हरु।।

कंद मूल फल असन, कबहुँ जल पवनहि।

सूखे बेलके पात खात दिन गवनहि।।

नाम अपरना भयउ परन जब परिहरे।

नवन धवल कल कीरति सकल भुवन भरे।।

देखि सराहहिं गिरिजहि मुनिबरु मुनि बहु।

अस तप सुना न दीख कबहुँ काहूँ कहु।।

काहूँ न देख्यौ कहहिं यह तपु जोग फल फल चारि का।

नहिं जानि जाइ न कहति चाहति काहि कुधर-कुमारिका।।

बटु बेष पेखन पेम पनु ब्रत नेम ससि सेखर गए।

मनसहिं समरपेउ आपु गिरिजहि बचन मृदु बोलत भए ।।5।।

देखि दसा करुनाकर हर दुख पायउ।

मोर कठोर सुभाय हृदयँ अस आयउ।।

बंस प्रसंसि मातु पितु कहि सब लायक।

अमिय बचनु बटु बोलेउ अति सुख दायक।।

देबि करौं कछु बिनती बिलगु न मानब।

कहउँ सनेहँ सुभाय साँच जियँ जानब।।

जननि जगत जस प्रगटेहु मातु पिता कर।

तीय रतन तुम उपजिहु भव रतनाकर।।

अगम न कछु जग तुम कहँ मोहि अस सूझइ।

बिनु कामना कलेस कलेस न बूझइ।।

जौ बर लागि करहु तप सौ लरिकाइअ।

पारस जौ घर मिलै तौ मेरु कि जाइअ।।

मोरें जान कलेस करिअ बिनु काजहि।

सुधा कि रोगिहि चाइह रतन की राजहि।।

लखि न परेउ तप कारन बटु हियँ हारेउ।

सुनि प्रिय बचन सखी मुख गौरि निहारेउ।।

गौरीं निहारेउ सखी मुख रुख पाइ तेहिं कारन कहा।

तपु कराहिं हर हितु सुनि बिहँसि बटु कहत मुरुखाई महा।।

जेहिं दीन्ह अस उपदेस बरेहु कलेस करि बरु बावरो।

हित लागि कहौं सुभायँ सो बड़ बिषम बैरी रावरो ।।6।।

कहहु काह सुनि रीझिहु बर अकुलीनहिं।

अगुन अमान अजाति मातु पितु हीनहिं।।

भीख मागि भव खाहिं चिता नित सोवहिं।

नाचहिं नगन पिसाच पिसाचिनि जोवहिं।।

भाँग धतूर अहार छार लपटावहिं।

जोगी जटिल सरोष भोग नहिं भावहिं।।

सुमुखि सुलोचनि हर मुख पंच तिलोचन।

बामदेव फुर नाम काम मद मोचन।।

एकउ हरहिं न बर गुन कोटिक दूषन।

नर कपाल गज खाल ब्याल बिष भूषन।।

कहँ राउर गुन सील सरूप सुहावन।

कहाँ अमंगल बेषु बिसेषु भयावन।।

जो सोचइ ससि कलहि सो सोचइ रौरेहि।

कहा मोर मन धरि न बिरय बर बौरेहि।।

हिए हेरि हठ तजहु हठै दुख पैहहु।

ब्याह समय सिख मोरि समुझि पछितैहहु।।

पछिताब भूत पिसाच प्रेत जनेत ऐहैं साजि कै।

जम धार सरिस निहारि सब नर-नारि चलिहहिं भाजि कै।।

गज अजिन दिब्य दुकूल जोरत सखी हँसि मुख मोरि कै।

कोउ प्रगट कोउ हियँ कहिहि मिलवत अमिय माहुर घोरि कै ।7।

तुमहिं सहित असवार बसहँ जब होइहहिं।

निरखि नगर नर नारि बिहँसि मुख गोइहहिं।।

बटु करि कोटि कुतरक जथा रुचि बोलइ।

अचल सुता मनु अचल बयारि कि डोलइ।।

साँच सनेह साँच रुचि जो हठि फेरइ।

सावन सरिस सिंधु रुख सूप सो घेरइ।।

मनि बिनु फनि जल हीन मीन तनु त्यागइ।

सो कि दोष गुन गनइ जो जेहि अनुरागइ।।

करन कटुक चटु बचन बिसिष सम हिय हए।

अरुन नयन चढ़ि भृकुटि अधर फरकत भए।।

बोली फिर लखि सखिहि काँपु तन थर थर।

आलि बिदा करु बटुहि बेगि बड़ बरबर।।

कहुँ तिय होहिं सयानि सुनहिं सिख राउरि।

बौरेहि कैं अनुराग भइउँ बड़ि बाउरि।।

दोष निधान इसानु सत्य सबु भाषेउ।

मेटि को सकइ सो आँकु जो बिधि लिखि राखेउ।।

को करि बादु बिबादु बिषादु बढ़ावइ।

मीठ काहि कबि कहहिं जाहि जोइ भावइ।।

भइ बड़ि बार आलि कहुँ काज सिधारहिं।

बकि जनि उठहिं बहोरि कुजुगति सवाँरहि।।

जनि कहहिं कछु बिपरीत जानत प्रीति रीति न बात की।

सिव साधु निंदुक मंद अति जोउ सुनै सोउ बड़ पातकी।।

सुनि बचन सोधि सनेहु तुलसी साँच अबिचल पावनो।

भए प्रगट करुनासिंधु संकरु भाल चंद सुहावनो ।।8।।

सुन्दर गौर सरीर भूति भलि सोहइ।

लोचन भाल बिसाल बदनु मन मोहइ।।

सैल कुमारि निहारि मनोहर मूरति।

सजल नयन हियँ हरषु पुलक तन पूरति।।

पुनि पुनि करै प्रनामु न आवत कछु कहि।

दैखों सपन कि सौतुख ससि सेखर सहि।।

जैसें जनम दरिद्र महामनि पावइ।

पेखत प्रगट प्रभाउ प्रतीति न आवइ।।

सुफल मनोरथ भयउ गौरि सोहइ सुठि।

घर ते खेलन मनहुँ अबहिं आई उठि।।

देखि रूप अनुराग महेस भए बस।

कहत बचन जनु सानि सनेह सुधा रस।।

हमहि आजु लगि कनउड़ काहुँ न कीन्हेउ।

पारबती तप प्रेम मोल मोहि लीन्हेउ।।

अब जो कहहु सो करउँ बिलंबु न एहिं घरी।

सुनि महेस मृदु बचन पुलिक पायन्ह परी।।

परि पायँ सखि मुख कहि जनायो आपु बाप अधीनता।

परितोषि गिरिजहि चले बरनत प्रीति नीति प्रबीनता।।

हर हृदयँ धरि घर गौरि गवनी कीन्ह बिधि मन भावनो।

आनंदु प्रेम समाजु मंगल गान बाजु बधावनो ।।9।।

सिव सुमिरे मुनि सात आइ सिर नाइन्हि।

कीन्ह संभु सनमानु जन्म फल पाइन्हि।।

सुमिरहिं सकृत तुम्हहि जन तेइ सुकृती बर।

नाथ जिन्हहि सुधि करिअ तिनहिं सम तेइ हर।।

सुनि मुनि बिनय महेस परम सुख पायउ।

कथा प्रसंग मुनीसन्ह सकल सुनायउ।।

जाहु हिमाचल गेह प्रसंग चलायहु।

जौं मन मान तुम्हार तौ लगन धरायहु।।

अरुधंती मिलि मनहिं बात चलाइहि।

नारि कुसल इहिं काज काजु बनि आइहि।।

दुलहिनि उमा ईसु बरु साधक ए मुनि।

बनिहि अवसि यहु काजु गगन भइ अस धुनि।।

भयउ अकनि आनंद महेस मुनीसन्ह।

देहिं सुलोचनि सगुन कलस लिएँ सीसन्ह।।

सिव सो कहेउ दिन ठाउँ बहोरि मिलनु जहँ।

चले मुदित मुनिराज गए गिरिबर पहँ।।

गिरि गेह अति नेहँ आदर पूजि पहुँनाई करी।

घरवात घरनि समेत कन्या आनि सब आगें धरी।।

सुखु पाइ बात चलाइ सुदिन सोधाइ गिरिह सिखाइ कै।

रिषि सात प्रातहिं चले प्रमुदित ललित लगन लिखाइ कै ।।10।।

बिप्र बृंद सनमानि पूजि कुल गुर सुर।

परेउ निसानहिं घाउ चाउ चहुँ दिसि पुर।।

गिरि बन सरित सिंधु सर सुनइ जो पायउ।

सब कहँ गिरिबर नायक नेवत पठायउ।।

धरि धरि सुंदर बेष चले हरषित हिएँ।

चँवर चीर उपहार हार मनि गन लिएँ।।

कहेउ हरषि हिमवान बितान बनावन।

हरषित लगीं सुआसिनि मंगल गावन।।

तोरन कलस चवँर धुज बिबिध बनाइन्हि।

हाट पटोरन्हि छाय सफल तरु लाइन्हि।।

गौरी नैहर केहि बिधि कहहु बखानिय।

जनु रितुराज मनोज राज रजधानिय।।

जनु राजधानी मदन की बिरची चतुर बिधि और हीं।

रचना बिचित्र बिलोकि लोचन बिथकि ठौरहिं ठौर हीं।।

एहि भांति ब्याह समाज सजि गिरिराजु मगु जोवन लगे।

तुलसी लगन लै दीन्ह मुनिन्ह महेस आनँद रँग मगे ।।1 1 ।।

बेगि बोलाइ बिरंचि बचाइ लगन जब।

कहेन्हि बिआहन चलहु बुलाइ अमर सब।।

बिधि पठए जहँ तहँ सब सिव गन धावन।

सुनि हरषहिं सुर कहहिं निसान बजावन।।

रचहिं बिमान बनाइ सगुन पावहिं भले।

निज निज साजु समाजु साजि सुरगन चले।।

मुदित सकल सिव दूत भूत गन गाजहिं।

सूकर महिष स्वान खर बाहन साजहिं।।

नाचहिं नाना रंग तरंग बढ़ावहिं।

अज उलूक बृक नाद गीत गन गावहिं।।

रमानाथ सुरनाथ साथ सब सुर गन।

आए जहँ बिधि संभु देखि हरषे मन।।

मिले हरिहिं हरु हरषि सुभाषि सुरेसहि।

सुर निहारि सनमानेउ मोद महेसहि।।

बहु बिधि बाहन जान बिमान बिराजहिं।

चली बरात निसान गहागह बाजहिं।।

बाजहिं निसान सुगान नभ चढ़ि बसह बिधुभूषन चले।

बरषहिं सुमन जय-जय करहिं सुर सगुन सुभ मंगल भले।।

तुलसी बराती भूत प्रेत पिसाच पसुपति संग लसे।

गज छाल ब्याल कपाल माल बिलोकि बर सुर हरि हँसे ।।12।।

बिबुध बोलि हरि कहेउ निकट पुर आयउ।

आपन-आपन साज सबहिं बिलगायउ।।

प्रमथनाथ के साथ प्रमथ गन राजहिं।

बिबिध भांति मुख बाहन बेष बिराजहिं।।

कमठ खपर मढि खाल निसान बजावहिं।

नर कपाल जल भरि-भरि पिअहिं पिआवहिं।।

बर अनुहरत बरात बनी हरि हँसि कहा।

सुनि हियँ हँसत महेस केलि कौतुक महा।।

बड़ बिनोद मग मोद न कछु कहि आवत।

जाइ नगर नियरानि बरात बजावत।।

पुर खरभर उर हरषेउ अचल अखंडलु।

परब उदधि उमगेउ जनु लखि बिधु मंडलु।

प्रमुदित गे अगवान बिलोकि बरातहि।

भभरे बनइ न रहत न बनइ परातहि।।

चले भाजि गज बाजि फिरहिं नहिं फेरत।

बालक भभरि भुलान फिरहिं घर हेरत।।

दीन्ह जाइ जनवास सुपास किए सब।

घर-घर बालक बात कहन लागे तब।।

प्रेत बेताल बराती भूत भयानक।

बरद चढ़ा बर बाउर सबइ सुबानक।।

कुसल करइ करतार कहहिं हम साँचिअ।

देखब कोटि बिआह जिअत जौं बाँचिअ।।

समाचार सुनि सोचु भयउ मन मयनहिं।

नारद के उपदेस कवन घर गे नहिं।।

घर घाल चालक कलह प्रिय कहियत परम परमारथी।

तैसी बरेखी कीन्हि पुनि मुनि सात स्वारथ सारथी।।

उर लाइ उमहि अनेक बिधि जलपति जननि दुख मानई।

हिमवान कहेउ इसान महिमा अगम निगम न जानई ।।13।।

सुनि मैना भइ सुमन सखी देखन चली।

जहँ तहँ चरचा चलइ हाट चौहट गली।।

श्रीपति सुरपति बिबुध बात सब सुनि-सुनि।

हँसहिं कमल कर जोरि मोरि मुख पुनि-पुनि।।

लखि लौकिक गति संभु जानि बड़ सोहर।

भए सुंदर सत कोटि मनोज मनोहर।।

नील निचोल छाल भइ फनि मनि भूषन।

रोम-रोम पर उदित रूपमय पूषन।।

गन भए मंगल बेष मदन मन मोहन।

सुन चले हियँ हरषि नारि नर जोहन।।

संभु सरद राकेस नखत गन सुर गन।

जनु चकोर चहुँ ओर बिराजहिं पुर जन।।

गिरबर पठए बोलि लगन बेरा भई।

मंगल अरघ पाँवड़े देत चले लई।।

होहिं सुमंगल सगुन सुमन बरषहिं सुर।

गहगहे गान निसान मोद मंगल पुर।।

पहिलिहिं पवरि सुसामध भा सुख दायक।

इति बिधि उत हिमवान सरिस सब लायक।।

मनि चामीकर चारु थार सजि आरति।

रति सिहाहिं लखि रूप गान सुनि भारति।।

भरी भाग अनुराग पुलकि तन मुद मन।

मदन मत्त गजगवनि चलीं बर परिछन।।

बर बिलोकि बिधु गौर सुअंग उजागर।

करति आरती सासु मगन सुख सागर।।

सुख सिंधु मगन उतारि आरति करि निछावर निरखि कै।

मगु अरघ बसन प्रसून भरि लेइ चलीं मण्डप हरषि कै।।

हिमवान दीन्हें उचित आसन सकल सुर सनमानि कै।

तेहि समय साज समाज सब राखे सुमंडप आनि कै ।।14।।

अरघ देइ मनि आसन बर बैठायउ।

पूजि कीन्ह मधुपर्क अमी अचवायउ।।

सप्त रिषिन्ह बिधि कहेउ बिलंब न लाइअ।

लगन बेर भइ बेगि बिधान बनाइअ।।

थापि अनल हर बरहि बसन पहिरायउ।

आनहु दुलहिनि बेगि समय अब आयउ।।

सखी सुआसिनि संग गौरि सुठि सोहति।

प्रगट रूपमय मूरति जनु जग मोहति।।

भूषन बसन समय सम सोभा सो भली।

सुषमा बेलि नवल जनु रूप फलनि फली।।

कहहु काहि पटतरिय गौरि गुन रूपहि।

सिंधु कहिय केहि भाँति सरिस सर कूपहि।।

आवत उमहि बिलोकि सीस सुर नावहिं।

भव कृतारथ जनम जानि सुख पावहिं।।

बिप्र बेद धुनि करहिं सुभासिष कहि-कहि।

गान निसान सुमन झरि अवसर लहि-लहि।।

बर दुलहिनिहि बिलोकि सकल मन हरसहिं।

साखोच्चार समय सब सुर मुनि बिहसहिं।।

लोक बेद बिधि कीन्ह लीन्ह जल कुस कर।

कन्या दान सँकलप कीन्ह धरनीधर।।

पूजे कुल गुर देव कलसु सिल सुभ घरी।

लावा होम बिधान बहुरि भाँवरि परी।।

बंदन बंदि ग्रंथि बिधि करि धुव देखेउ।

भा बिबाह सब कहहिं जनम फल पेखेउ।।

पेखेउ जनम फलु भा बिबाह उछाह उमगहि दस दिसा।

नीसान गान प्रसूत झरि तुलसी सुहावनि सो निसा।।

दाइज बसन मनि धेनु धन हय गय सुसेवक सेवकी।

दीन्हीं मुदित गिरिराज जे गिरिजहि पिआरि पेव की ।।115।।

बहुरि बराती मुदित चले जनवासहि।

दूलह दुलहिन गे तब हास-अवासहि।।

रोकि द्वार मैना तब कौतुक कीन्हेउ।

करि लहकौरि गौरि हर बड़ सुख दीन्हेउ।।

जुआ खेलावत गारि देहिं गिरि नारिहि।

आपानि ओर निहारि प्रमोद पुरारिहि।।

सखी सुआसिनि सासु पाउ सुख सब बिधि।

जनवासेहि बर चलेउ सकल मंगल निधि।।

भइ जेवनार बहोरि बुलाइ सकल सुर।

बैठाए गिरिराज धरम धरनि धुर।।

परुसन लगे सुआर बिबुध जन जेवहिं।

देहिं गारि बर नारि मोद मन भेवहिं।।

करहिं सुमंगल गान सुघर सहनाइन्ह।

जेइँ चले हरि दुहिन सहित सुर भाइन्ह।।

भूधर भोरु बिदा कर साज सजायउ।

चले देव सजि जान निसान बजायउ।।

सनमाने सुर सकल दीन्ह पहिरावनि।

कीन्ह बड़ाई बिनय सनेह सुहावनि।।

गहि सिव पद कह सासु बिनय मृदु मानबि।

गौरि सजीवन मूरि मोरि जियँ जानबि।।

भेंटि बिदा करि बहुरि भेंटि पहुँचावहिं।

हुँकरि हुँकरि सु लवाइ धेनु जनु धावहिं।।

उमा पातु मुख निरखि नैन जल मोचहिं।

नारि जनमु जग जाय सखी कहि सोचहिं।।

भेंटि उमहि गिरिराज सहित सुत परिजन।

बहुत भांति समुझाइ फिरे बिलखित मन।।

संकर गौरि समेत गए कैलासहि।

नाइ नाइ सिर देव चले निज बासहि।।

उमा महेस बिआह उछाह भुवन भरे।

सब के सकल मनोरथ बिधि पूरन करे।।

प्रेम पाट पटडोरि गौरि हर गुन मनि।

मंगल हार रचेउ कबि मति मृगलोचनि।।

मृगनयनि बिधुबदनी रचेउ मनि मंजु मंगलहार सो।

उर धरहुँ जुबती जन बिलोकि तिलोक सोभा सार सो।।

कल्यान काज उछाह ब्याह सनेह सहित जो गाइहै।

तुलसी उमा संकर प्रसाद प्रमोद मन प्रिय पाइहै ।।16।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

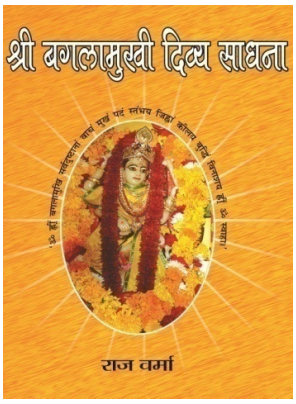
श्री बगलामुखी दिव्य साधना
राज वर्मा